



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

जनसंचार विभाग

राष्ट्रीय संगोष्ठी

‘हिंदी पत्रकारिता के दो सौ वर्ष : विरासत, सरोकार और विकसित भारत का संकल्प’
(04 एवं 05 नवंबर, 2026)

संरक्षक

प्रो. कुमुद शर्मा

माननीय कुलपति

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

अध्यक्ष

डॉ. राजेश लेहकपुरे

अध्यक्ष तथा एसोशिएट प्रोफेसर, जनसंचार विभाग

संगोष्ठी संयोजक

डॉ. रेणु सिंह

सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग

सह-संयोजक

डॉ. संदीप कुमार वर्मा

सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग

डॉ. गीता शाहू

सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग

श्री बुद्धदास मिरगे

जनसंपर्क अधिकारी, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

विश्वविद्यालय के संदर्भ में :

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना भारतीय संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत एक केंद्रीय विश्वविद्यालय के रूप में की गई थी। यह अखिल भारतीय अधिकारिता का पहला अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय है, जो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की कर्मस्थली वर्धा में अवस्थित है। विश्वविद्यालय 212 एकड़ क्षेत्रफल में विस्तारित है। विश्वविद्यालय में कुल 08 विद्यापीठ हैं, जिसमें भाषा विद्यापीठ, साहित्य विद्यापीठ, संस्कृति विद्यापीठ, अनुवाद तथा निर्वचन विद्यापीठ, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, विधि विद्यापीठ, प्रबंधन विद्यापीठ, शिक्षा विद्यापीठ शामिल है। वर्धा मुख्यालय के अतिरिक्त विश्वविद्यालय के तीन क्षेत्रीय केंद्र भी हैं। क्षेत्रीय केंद्रों में प्रयागराज (उत्तर प्रदेश), कोलकाता (पश्चिम बंगाल) और रिद्धपुर (अमरावती, महाराष्ट्र) शामिल है। तीन क्षेत्रीय केंद्रों में नियमित शोध एवं अकादमिक कार्य होता है। यह विश्वविद्यालय नियमित शैक्षणिक अनुसंधान कार्यक्रमों के अतिरिक्त दूर शिक्षा कार्यक्रम भी संचालित करता है।

उद्देश्य : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय अधिनियम की धारा 04 के अनुसार विश्वविद्यालय के उद्देश्यों में हिंदी भाषा और साहित्य का संवर्धन और विकास करना और उस प्रयोजन के लिए विद्या की सुसंगत शाखाओं में शिक्षण और अनुसंधान की सुविधाएं प्रदान करना है। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में तुलनात्मक अध्ययनों और अनुसंधान के सक्रिय अनुसरण के लिए व्यवस्था करना, देश और विदेश में सुसंगत सूचना के विकास और प्रसारण के लिए सुविधाएं प्रदान करना, हिंदी की प्रकाश्यात्मक प्रभावशीलता में सुधार करने के लिए अनुवाद, निर्वचन और भाषा विज्ञान आदि जैसे क्षेत्रों में अनुसंधान, शिक्षा और प्रशिक्षण के कार्यक्रमों की व्यवस्था करना, विदेशों में हिंदी में अभिरुचि रखने वाले हिंदी विद्वानों और समूहों तक पहुँचना और विश्वविद्यालय में प्रशिक्षण और अनुसंधान के लिए उन्हें सहबद्ध करना और दूर शिक्षा पद्धति के माध्यम से हिंदी को लोकप्रिय बनाना है।

जनसंचार विभाग के संदर्भ में :

जनसंचार विभाग भारत की विभिन्न भाषाओं में गुंथी हुई संचार व्यवस्था केंद्रित अध्ययन व अनुसंधान को समर्पित है। जनसंचार विभाग मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अंतर्गत आता है। जनसंचार विभाग वर्ष 2004 में स्थापित किया गया। जनसंचार विभाग अपने विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को संचार के विविध क्षेत्रों में तकनीकी सूक्ष्मता की विकसित समझ तथा अपने विषय की विशेषज्ञता प्रदान करता है। यह विभाग स्तरीय शोध के लिए निरंतर गतिशील है। विभाग द्वारा राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर के संचार विशेषज्ञों को आमंत्रित कर ज्ञानवर्धन के प्रयास किए जा रहे हैं। मीडिया अध्ययन के लिए नई सूचना प्रौद्योगिकी के साथ जुड़कर जनसंचार विभाग द्वारा विशेष कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है, जैसे मीडिया शोध में गुणवत्ता, तात्कालिक विषयों पर लेखन, कौशल आधारित शिक्षा, मीडिया प्रबंधन, जनसंपर्क एवं विज्ञापन की नई प्रवृत्तियाँ, नवाचार और मीडिया प्रबंधन, पत्रकारिता के नैतिकमूल्य, टीवी और फिल्म निर्माण, विद्यार्थियों में सूचना तकनीक की कुशलता आदि। विभाग के समृद्ध विभागीय पुस्तकालय, अत्याधुनिक उपकरण से लैस स्टूडियो, न्यूज तथा तकनीक प्रशिक्षण कक्ष के उपयोग द्वारा अध्ययनरत विद्यार्थियों में कुशलता के साथ ही उनका व्यक्तित्व विकास भी किया जाता है। टीवी निर्माण में उच्च व्यावसायिक गुणवत्ता की दृष्टि से विद्यार्थियों को उत्तम प्रशिक्षण मिलने हेतु मीडिया लैब में उच्च गुणवत्ता वाले कैमरे एवं अन्य सामग्री का प्रयोग किया जाता है। स्मार्ट क्लास रूम, कंप्यूटर सुविधाओं के साथ ही विद्यार्थियों को टीवी कार्यक्रम निर्माण के लिए एपल मैक प्रो कंप्यूटर की सुविधा भी मीडिया लैब में उपलब्ध है। समकालीन सामाजिक प्रतिमान के समानांतर मीडिया क्षेत्र को नई दिशा देना, यह जनसंचार विभाग का लक्ष्य है।

संगोष्ठी के संदर्भ में :

‘हिंदी पत्रकारिता के दो सौ वर्ष : विरासत, सरोकार और विकसित भारत का संकल्प’ यह हिंदी पत्रकारिता की दो शताब्दियों की गौरवपूर्ण यात्रा, उसके सामाजिक-सांस्कृतिक योगदान और राष्ट्र निर्माण में उसकी भूमिका को रेखांकित करने वाला व्यापक विषय है। ‘उदन्त मार्चण्ड’ से आरंभ हुई हिंदी पत्रकारिता ने जनचेतना, स्वतंत्रता आंदोलन, सामाजिक सुधार और लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया के दौर में पत्रकारिता नए अवसरों को प्राप्त कर रही है तथा इससे जुड़ी जटिल चुनौतियों का भी सामना कर रही है। ऐसे में हिंदी पत्रकारिता की ऐतिहासिक विरासत, विश्वसनीयता और जनसरोकारों को आधुनिक तकनीक से जोड़ते हुए ‘विकसित भारत @2047’ के निर्माण में उसकी भूमिका पर विचार करना इस विषय का प्रमुख उद्देश्य है।

संगोष्ठी के उद्देश्य

1. हिंदी पत्रकारिता के दो सौ वर्षों के इतिहास और विकास-यात्रा का ऐतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अध्ययन करना।
2. हिंदी एवं भारतीय भाषाई पत्रकारिता के विकास, योगदान और वर्तमान चुनौतियों पर विमर्श करना।
3. पत्रकारिता के माध्यम से लोकतंत्र, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय, समानता और जनभागीदारी को सुदृढ़ करने की संभावनाओं का अध्ययन करना।
4. डिजिटल पत्रकारिता, सोशल मीडिया, मोबाइल पत्रकारिता और नागरिक पत्रकारिता के कारण बदलते हिंदी मीडिया परिदृश्य का विश्लेषण करना।
5. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और डीपफेक के दौर में हिंदी पत्रकारिता की विश्वसनीयता, नैतिकता और उत्तरदायित्व पर विमर्श करना।
6. मीडिया साक्षरता और तथ्य-जांच (Fact-checking) की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए जिम्मेदार नागरिक समाज के निर्माण में हिंदी पत्रकारिता की भूमिका पर विचार करना।
7. हिंदी पत्रकारिता में महिलाओं, युवा, वंचित समुदायों, ग्रामीण समाज और हाशिए के समूहों की भागीदारी तथा प्रतिनिधित्व का मूल्यांकन करना।

8. विकसित भारत @2047 के संदर्भ में हिंदी पत्रकारिता की भूमिका को विकास, नवाचार, शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान, ग्रामीण विकास और सामाजिक परिवर्तन से जोड़कर देखना।
9. पत्रकारिता को केवल सूचना के माध्यम के रूप में नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण, सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक संरक्षण के प्रभावी माध्यम के रूप में समझना।
10. स्थानीय से वैश्विक (Local to Global) हिंदी पत्रकारिता की संभावनाओं तथा वैश्विक मीडिया परिदृश्य में सशक्त बनाने के उपायों पर विचार करना।

संगोष्ठी के उप-विषय

हिंदी पत्रकारिता की ऐतिहासिक यात्रा

- 'उदन्त मार्तण्ड' से डिजिटल पत्रकारिता तक हिंदी पत्रकारिता का विकास
- हिंदी पत्रकारिता के दो सौ वर्षों की प्रमुख उपलब्धियाँ
- भारतीय नवजागरण और हिंदी पत्रकारिता
- स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी पत्रकारिता की भूमिका
- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की हिंदी पत्रकारिता
- आपातकाल की हिंदी पत्रकारिता
- उदारीकरण के बाद की हिंदी पत्रकारिता
- हिंदी जनमाध्यमों का बदलता स्वरूप
- भारत के हिंदीक्षेत्र की हिंदी पत्रकारिता
- हिंदी पत्रकारिता के प्रमुख हस्ताक्षर
- हिंदी साहित्य और हिंदी पत्रकारिता का अंतर्संबंध
- विदेशों में हिंदी पत्रकारिता का विकास

हिंदी पत्रकारिता : सामाजिक सरोकार और राष्ट्र निर्माण

- सामाजिक आंदोलनों में हिंदी पत्रकारिता की भूमिका
- हिंदी पत्रकारिता और हाशिए के समुदाय
- हिंदी पत्रकारिता और महिला सशक्तीकरण
- दलित एवं आदिवासी विमर्श में हिंदी पत्रकारिता
- हिंदी पत्रकारिता और सामाजिक न्याय
- हिंदी पत्रकारिता और जनमत निर्माण
- हिंदी पत्रकारिता और राष्ट्रीय एकता
- राष्ट्र निर्माण में हिंदी पत्रकारिता का योगदान
- हिंदी पत्रकारिता और भारतीय दृष्टि

हिंदी पत्रकारिता : कृत्रिम बुद्धिमत्ता, नैतिकता, संभावनाएं और चुनौतियाँ

- डिजिटल युग में हिंदी पत्रकारिता : संभावनाएँ और चुनौतियाँ
- हिंदी पत्रकारिता : सोशल मीडिया और नैतिकता
- मोबाइल पत्रकारिता और नई मीडिया संस्कृति
- ब्रेकिंग न्यूज और हिंदी मीडिया
- फेक न्यूज, पेड न्यूज और हिंदी मीडिया
- मीडिया साक्षरता और जिम्मेदार पत्रकारिता
- मीडिया स्वामित्व और हिंदी पत्रकारिता
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और हिंदी पत्रकारिता : तकनीकी विकास
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और हिंदी पत्रकारिता : नैतिकता, संभावनाएं और चुनौतियाँ

हिंदी पत्रकारिता : भाषा, संस्कृति और विकसित भारत

- हिंदी पत्रकारिता और भारतीय सांस्कृतिक विरासत
- हिंदी भाषा के विकास में हिंदी पत्रकारिता का योगदान
- हिंदी पत्रकारिता और लोक संस्कृति

- डिजिटल पत्रकारिता और हिंदी भाषा की संभावनाएँ
- हिंदी पत्रकारिता और भारतीय ज्ञान परंपरा
- विकसित भारत @2047 और हिंदी पत्रकारिता की भूमिका
- सहभागी विकास संचार और विकसित भारत
- आत्मनिर्भर भारत और हिंदी पत्रकारिता
- ग्रामीण भारत के विकास में हिंदी मीडिया की भूमिका
- शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक विकास की पत्रकारिता
- विज्ञान एवं तकनीकी पत्रकारिता और विकसित भारत
- कृषि एवं ग्रामीण विकास क्षेत्र और हिंदी पत्रकारिता
- युवा, रोजगार, कौशल विकास और हिंदी पत्रकारिता
- नई मीडिया की अर्थव्यवस्था और हिंदी पत्रकारिता
- हिंदी पत्रकारिता का भविष्य : संभावनाएँ और चुनौतियाँ

पंजीकरण शुल्क विवरण :

- सहभागिता एवं शोध-पत्र प्रस्तुतीकरण (विद्यार्थी) : 200/- (दो सौ रुपये)
- सहभागिता एवं शोध-पत्र प्रस्तुतीकरण (शोधार्थी) : 1000/- (एक हजार रुपये)
- सहभागिता एवं शोध-पत्र प्रस्तुतीकरण (अध्यापक) : 1500/- (एक हजार पांच सौ रुपये)
- पूर्व पंजीकरण आवश्यक, प्रतिभागियों को संगोष्ठी में पूर्ण शोध-पत्र प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा। प्रस्तुति का माध्यम : पीपीटी, पोस्टर आदि।

पंजीकरण तिथि व लिंक :

- शोध सारांश भेजने की अंतिम तिथि : 25 अक्टूबर, 2026
- पंजीकरण की अंतिम तिथि : 30 अक्टूबर, 2026
- शोध-पत्र जमा करने की अंतिम तिथि : 02 नवंबर, 2026
- पंजीकरण के लिए गूगल लिंक : <https://forms.gle/jsKowVisyxTKSfnA6>
- शोध सारांश एवं शोध पत्र भेजने हेतु ई-मेल : rashtriyasangoshthimasscom@gmail.com

आवश्यक दिशानिर्देश :

- शोध सार/पत्र केवल हिंदी भाषा में ही स्वीकार्य होगा।
- शोध-पत्र प्रस्तुति ऑफलाइन/ऑनलाइन में होगी।
- शोध-पत्र सारांश की अधिकतम शब्द सीमा 250-300 शब्द है।
- पूर्ण शोध-पत्र की अधिकतम शब्द सीमा 3000-4000 शब्द है।
- शोध-पत्र के साथ पंजीकरण शुल्क की रसीद भेजना अनिवार्य है।
- शोध कार्य मूल, प्लेजरिज्म फ्री एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) डिटेक्शन फ्री होना चाहिए।
- शोध सार/पत्र में लेखक का नाम, पदनाम, संस्था का नाम, डाक पता, मोबाईल नंबर तथा ई-मेल आईडी का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए।
- शोध सार/पत्र की समीक्षा के उपरांत प्रतिभागी को उसकी स्वीकृति/अस्वीकृति के संदर्भ में सूचित किया जायेगा।
- शोध-पत्र के संयुक्त लेखकों को पंजीकरण शुल्क का अलग-अलग भुगतान करना होगा।
- शोध-पत्र का फॉन्ट (यूनिकोड) में 14/16 आकार में टाइप किया जाना चाहिए, जिसमें 1.5 लाइनिंग स्पेस स्वीकार्य है। संदर्भ सूची को वर्णानुक्रम में व्यवस्थित किया जाना चाहिए और पाठ के अंत में एपीए 7वें संस्करण प्रारूप में दिया जाना चाहिए।
- चयनित शोध-पत्रों को आईएसबीएन/आईएसएसएन नंबर के साथ संपादित पुस्तक/जर्नल में प्रकाशित किया जाएगा।
- संपर्क सूत्र : 7588311465 (संयोजक), 7620121532 (अध्यक्ष)

पंजीकरण शुल्क ऑनलाइन भेजने का विवरण

Account Holder's Name : Finance Officer, Mahatma Gandhi Antarrashtriya
Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

Bank Name : Bank of India, Wardha

Account No. : 972110210000005

IFSC Code No. : BKID0009721

MICR Code No. : 442013003

पंजीकरण शुल्क जमा करने हेतु QR कोड

